राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा

गुरु नानक

कवि → संत गुरुनानक

जन्म → 1469 में लाहौर के तलवंडी ग्राम में हुआ जो वर्तमान में पाकिस्तान में हैं, गुरुनानक जी का जन्मस्थल नानकाना साहब कहलाया|

माता → तृप्ता

पिता → कालू चन्द्र खत्री

पत्नी → सुलक्षणि

कवि के विषय में गुरुनानक सीखों के प्रथम गुरु -: थे | इसके दोहे में जीवन के अनुभवों को कबीर के रचनाओं के समान बुझे गये हैगुरुनानक जी की भेट मुगल | सम्राट बाबर से हुए थे|

रचना -: जपुजी, आशादीवार रहिदास सोहिथे

1539 में | कहते इसकी मृत्यु हो गई 'वाह्य गुरू'

राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा

राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा । बिखु खावै बिखु बोलै बिनु नावै निहफलु मटि भ्रमना ।। पुसतक पाठ व्याकरण बखाणें संधिआ करम निकाल करै । बिनु गुरसबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु अरुझि मरै ।। डंड कमंडल सिखा सूत धोती तीरथ गवनु अति भ्रमनु करै । रामनाम बिनु सांति न आवै जपि हरि हरि नाम सु पारि परै ।। जटा मुकुट तन भसम लगाई वसन छोड़ि तन नगन भया । जेते जीअ जंत जल थल महीअल जत्र तत्र तू सरब जीआ ।। गुरु परसादि राखिले जन कोउ हरिरस नानक झोलि पीआ ।

अर्थ -: प्रस्तुत कविता राम नाम बिनु बिरथे जगी जन्मा गुरुनानक जी द्वारा रचित है , ,नाम के बिना इस संसार में जन्म लेना व्यर्थ हैं - कि राम ,इसमें गुरुनानक जी कहते है इसके बिना मनुष्य विष खाता हो और मनुष्य की बानी राम नाम के बिना विष के | समान हो जाता है

मनुष्य पुस्तक पढ़ ले व्याकरण का बखान कर ले। और तीनों समय संध्याकाल उपासना कर थे। परंतु गुरु शब्द के बिना मुक्ति नही मिलती और रामनाम के बिना मनुष्य - सांसारिक बंधन में उलझकर यह जाता है।

मुल्य डंडा, कमंडल जनेऊ, धोती धारण कर तीर्थ छात्रा करता है। परंतु राम नाम के बिना शांति कहा मिलती हैअतः प्राणि को हरिनाम का जप करना चाहिए। जिससे की , माया से मुक्ति पा सके।-वह मोह

मनुष्य जटा मुकुट धारण करता हो तब पर भस्म लगाता है। और कपड़ा छोड़ नग्न हो जाता हो यह सब बाहरी दिखावा ही मनुष्य को रामनाम का जप करना चाहिए। क्योंकि संसार में स्थल पर रहने वाली जितरे भी जीव, जंतु तथा वायु और जलमेर होवाले - पो रखा हो उसी - प्राणी उन्हीं के कृपा से जीवित ही जिस पर हमने हरिरस का चोल प्रकार तुम भी हरिरस का घोल पीकर संसारिक सुख तथा मोह माया से मुक्त हो जाओ।

जो नर दुख में दुख नहिं मानै

जो नर दुख में दुख नहिं मानै । सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ।। नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना । हरष सोक तें रहै नियारो, नाहि मान अपमाना ।। आसा मनसा सकल त्यागि कै जग तें रहै निरासा । काम क्रोध जेहि परसे नाहिन तेहिं घट ब्रह्म निवासा ।। गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्हीं तिन्ह यह जुगति पिछानी । नानक लीन भयो गोबिंद सो ज्यों पानी सँग पानी ।।

अर्थ -: प्रस्तुत कविता इसके | गुरुनानक द्वारा रचित है "जो नर दुख में दुख नहीं मानै" जिसके पास सुख स्नेह ,माध्यम से कवि कहते है कि जो नर दुख में दुख नही मानता हैं और भय नही हैंजो निन्दा और स्तुति से प्रभावित न ,जो सोना को मिट्टी समझता हैं , शोख से अलग रहता हो तथा जिसके -और अपमान से पड़े हो। जो हर्ष -हो। तथा सोच ,वास्था। सच त्यागकर जग से निराश हो – अपमान एक समान हो जो आशा-लिए मान ,जिसके पास काम क्रोध न हो उसके शरीर में ब्रम्हा का वास होता हैं |

जिस व्यक्ति पर गुरु की कृपा होती हैं वह उस ब्राम्हण को प्रप्ति की युक्ति को पहचान सकता हैं अतः गुरुनानक जी उसी प्रकार गोविंद की भक्ति में लीन हो गए जिस प्रकार | पानी में पिल जाता है।-पानी

गुरुनानक-

–)Objective (-

1. गुरुनानक का जब कब हुआ था ?

Ans - 1469

2. सिख धर्म के संस्थापक कौन थे ?

Ans – गुरुनानक

3. गुरुनानक किस काल के कवि थे ?

Ans - भक्तिकाल

4गुरुनानक किस भक्तिधारा के कवि थे .?

Ans - निर्गुण भक्तिधारा

5. गुरुनानक की भेट किस मुगल शासक से हुई थीं?

Ans – बाबर

6. गुरुनानक के उपदेश्य में मिलती हैं |

Ans – गुरु की महत्ताराम जाप की महत्ता ,ब्राम्हण की सर्वशक्तिमत्ता ,

7. गुरुनानक की रचनाओं का संग्रह गुरू अर्जुन देव ने जो गुरु ग्रंथ साहिब से प्रसिद्ध कब दिया ?

Ans - 1604 ई

8. नानक के अनुसार गुरु की कृपा कैसे नर पर होता है ?

Ans - जो दुख में दुख नही मानता, जो सुखदुख मे उदासीन रहता-, जो कंचन माटी में भेद नही समझता

9. गुरु अर्जुन देव सिखों के कौन से थे ?

Ans – पाँचवे गुरु

10. नानक की दृष्टि में ब्रम्हा का निवास कहाँ होता है ?

Ans - सच्चे हृदय में

11 गुरुनानक की स्थनाओं का संग्रह किसने किया .?

Ans - गुरु अर्जुन देव सिंह

12किस कवि ने वर्णाश्रम व्यवस्था और कर्मकाण्ड का विरोध निर्गुन बघु की प्रचार . किया?

Ansगुरुनानक ने -

13. गुरुनानक के पद है ?

Ans- प्रेम सेव भक्ति के मधुर गीत

14. किसी रचना का संग्रह गुरु ग्रंथ नाम से प्रसिद्ध हो?

Ans - गुरुनानक

15. हरिरस से कवि का क्या अभिप्राय ही राम नाम का जप

Ans – राम नाम का जप -

16. गुरुनानक पंजाबी के साथ | में भी कविता लिखी है --------

Ans – हिन्दी

17. किसके बिना प्रण को मुक्ति नही मिलती है ?

Ans – गुरु ज्ञान के बिना

-Subjective–

1. कवि किसके बिना जगत् मे यह जन्म व्यर्थ मानता है ?

Ans – कवि गुरुनानक देव राम| नाम के बिना जगत मे यह जन्म को व्यर्थ मानते है-

2. वाणी कब विष के समान हो जाती है ?

Ans - जब मनुष्य रामतब उसका वाणी विष के ,नाम का उच्चारण नहीं करता है-
| समान हो जाता है

3. राम नाम कीर्तन के आगे कवि किन कर्मों की व्यर्थता सिद्ध करता है ?
Ans - कवि गुरुनानक के आगे अनेक कर्म जैसेडंडा -, कमंडल, जेनऊ धोती, सिर पर भस्म लगाता तथा हमेशा काम में ही उलझें रहना आदि की व्यर्थता सिद्ध करता है।

4. प्रथम पद के आधार पर बताएँ की कवि ने अपने युग में धर्म कैसे -साधना के कैसे - रूप देखे थे?

Ans - प्रथम पद के आधार पर कवि अपने युग में सभी कर्मों मे राम नाम का गुणगान तथा हरिभजन करने को सर्वोपरी माना है |

5. हरिरस से कवि का क्या अभिप्राय है |

Ans – हरिरस से कवि का अभिप्राय 'राम नाम की भक्ति से है |

6. कवि की दृष्टि में ब्रहा का निवास कहाँ होता है ?

Ans – कवि की दृष्टि से ब्राम्हा का निवास स्थान ऐसे व्यक्ति के हदय में होता हैजो , क्रोध से -सम्मान समान हो। जो काम-जिसके लिए मान ,दुख मे दुख नही मानता हो मुक्त हो।

7. गुरु की कृपा से किस युक्ति की पहचान हो पाती है ?

Ans | गुरु के कृपा से ब्राम्ह प्राप्ति के युक्ति कि पहचान हो पाती है –

8. व्याख्या करें -:

| राम नाम बिना अरुझी मरै (क)

व्याख्या मनुष्य राम नाम के जप के बिना सांसारिक मोह माया में उलझकर मर -:
| जाता है

कंचन मारी जानै (ख)

व्याख्या सोना को भी माटी -:समझना

नाही मान अपमाना ,शोक ते रहै नियारो,हर्ष (ग)

व्याख्या | शोक मे भी जो व्यक्ति अलग रहता है ,हर्ष -:

ज्यों पानी संग पानी ,नानक लीन भयो गोविंद सो (घ)

व्याख्या उसी प्रकार गुरुनानक गोविंद कि ,पानी में मिल जाता है-जिस प्रकार पानी -:
| भक्ति मे मिल जाते है